'झाँसी की रानी' उपन्यास में राष्ट्र-गौरव

डॉ. दीपक कुमारी

सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभिग

चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी

भारत एक महान देश है| आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, संस्कृतिक व भौतिक जीवन की सभी धाराओं में भारत के वीरों, महापुरषों व मनीषियों का अद्भुत योगदान है |विश्व संस्कृति व राजनीति में उनकी भूमिका अति महत्वपूर्ण है| किसी देश के स्वाभिमानी नागरिकों की यह हार्दिक इच्छा होती है कि वे अपने राष्ट्र की आधारशिला बने |एक राष्ट्र के रूप में भारत के अस्तित्व एवं उसकी अस्मिता की पहचान राष्ट्र-गौरव निहित मूल्यों में विद्यमान है |

सबसे पहले हम राष्ट्र-गौरव शब्द का अर्थ जान लेते हैं क्योंकि जिस देश के नागरिकों में अपने राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना न हो, वह राष्ट्र अवश्य ही पतन की कगार पर खड़ा होता है| भारत जैसे सांस्कृतिक अस्मिता वाले देश के नागरिकों में यह गुण (राष्ट्र-गौरव) कूट-कूट कर भरा हुआ है|

आचार्य रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित बृहत प्रमाणिक हिंदी कोश के अनुसार 'राष्ट्र' शब्द का अर्थ है-"राज्य, देश, एक राज्य में बसने वाला समस्त या पूरा जनसमूह (नेशन) राष्ट्र कहलाता है|" [1]

इसी तरह 'गौरव' शब्द का अर्थ है, "गुरु या भारी होने का भाव, बडप्पन, महत्व, सम्मान, इज्जत आदि बताया है |"[2] इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी एक राज्य या देश में बसने वाले जनसमूह का अपने राष्ट्र के प्रति सम्मान का भाव राष्ट्र-गौरव कहलाता है |राष्ट्रीय भावना मनुष्य के राजनीतिक जीवन को सदा से प्रभावित करती रही है | राज्य के जनपदीय स्वरूप से लेकर वर्तमान राष्ट्रीय राज्य तक यह भावना सदैव किसी-न-किसी रूप में राजनीतिक संघठनों के निर्माण को

प्रभावित करती रही है | परंतु राष्ट्रीयता का वर्तमान स्वरूप जिसे हम 'राष्ट्रवाद' कहते हैं, आधुनिक काल की देन है |

" 'राष्ट्र' शब्द को अंग्रेज़ी में 'नेशन' कहते हैं, जिसकी उत्पति लेटिन भाषा के 'नेशियो' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है- जन्म या जाति |"[3]

इस आधार पर कुछ लोग एक निश्चित भगौलिक सीमा में रहने वाली एक जाती को ही राष्ट्र के नाम से संबोधित कर देते हैं परंतु राष्ट्र के बारे में इस प्रकार की धारणा अधूरी है | वास्तव में राष्ट्र शब्द का आर्थ इतना संकीर्ण नहीं है,जितना प्राय: समझ लिया जाता है |

'राष्ट्र' शब्द में राजनीतिक धारणा छिपी हुई है और राष्ट्र केवल उसी समूह विशेष को कहा जा सकता है जो राष्ट्रप्रेम की भावना से अपनी राष्ट्रभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा रखता हो | जैसाकि बाल गंगाधर तिलक कहा करते थे कि, "ईश्वर और हमारा देश अलग-अलग नहीं है |"[4] अर्थात एक राष्ट्र के लोग अपने देश को, राज्य को भगवान के समान समझतें हैं |

'राष्ट्र' से हमारा तात्पर्य- राष्ट्र के प्रति निष्ठा से होता है | भारत में राष्ट्र-गौरव की भावना 1857 की क्रांति के दौरान विकसित हुई | धीरे-धीरे इस विचारधारा को व्यापक जनसमर्थन मिला और प्रत्येक राष्ट्र को अपना स्वतंत्र राजनीतिक अस्तित्व प्राप्त करने एवं उसे बनाये रखने का अधिकार प्राप्त हुआ |

राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना उत्पन्न करने में हमारे साहित्यकारों का भी पूरा योगदान है| भारत के लोगों को अपनी संस्कृति के प्रति सचेत करने का कार्य महान लेखकों की लेखनी से हुआ | उन्हीं महान साहित्यकारों में वृंदावनलाल वर्मा का प्रमुख स्थान हैं | वृंदावनलाल वर्मा का जन्म 9 जनवरी 1889 को मऊसनीपुर(झाँसी) में एक कुलीन श्रीवास्तव कायस्थ परिवार में हुआ था | इतिहास के प्रति वर्मा जी की रूचि बाल्यकाल से ही थी | अत: उन्होंने कानून की उच्च शिक्षा के साथ-

साथ इतिहास, राजनीति, दर्शन, मनोविज्ञान, संगीत, मूर्तिकला, तथा वास्तुकला का गहन अध्ययन किया | ऐतिहासिक उपन्यासों के कारण वर्मा जी को सर्वाधिक ख्याति प्राप्त हुई |

"उन्होंने अपने उपन्यासों में इस तथ्य को झुठला दिया कि 'ऐतिहासिक उपन्यास में या तो इतिहास मर जाता है या उपन्यास' बल्कि उन्होंने इतिहास और उपन्यास दोनों को एक नई दृष्टि प्रधान की |"[5] वृंदावनलाल वर्मा द्वारा रचित 'झाँसी की रानी' एक ऐतिहासिक उपन्यास है जिसकी रचना 1946 में की | यह उपन्यास बहुत प्रसिद हुआ तथा इसे हिन्दी भाषा में ऐतिहासिक उपन्यासों की श्रेणी में 'मील का पत्थर' माना जाता है |

वृंदावनलाल वर्मा का जन्म झाँसी में हुआ | अपने परिवेशगत वातावरण के कारण उन्होंने अपनी दादी-परदादी से झाँसी की रानी की वीरता के बारे में अनेक कहानियाँ सुनी| यह उपन्यास झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के जीवन पर आधारित है | रानी के अन्दर राष्ट्र-गौरव की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी और जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क में आता, वह उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था | यहाँ तक कि अंग्रेज़ अधिकारी जनरल रोज़ ने कहा था, "यह थी उनमें सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्कृष्ट वीर |"[6]

वृंदावनलाल वर्मा ने तत्कालीन राजनीतिक-सामाजिक परिवेश के माध्यम से 'झाँसी की रानी' उपन्यास में राष्ट्र-गौरव की भावना का सजीव चित्रण किया तथा रानी के शौर्य की गाथा को दर्शाया है | जब राजागंगाधर, मृत्यु के समीप थे तो उन्होंने अंग्रेज़ी सरकार से पुत्र गोद लेने की आज्ञा माँगी | एक स्त्री के हाथों अंग्रेज़ झाँसी जैसे समृद्ध राज्य को नहीं सौंपना चाहते थे | तब रजा ने स्थिर होकर कहा-" मेजर साहब, हमारी रानी सत्री जरुर है परंतु इसमें ऐसे गुण हैं कि संसार के बड़े-बड़े मर्द इसके पैरों की धूल अपने माथे पर चढ़ाएंगे|"[7] महाराज गंगाधरराव भी रानी के शौर्य से प्रभावित थे | इसी प्रकार जब एलिस ने महारानी को पांच हजार रुपया मासिक वृति देने को कहा तो उन्होंने

अचानक ऊँचे स्वर में पर्दे के पीछे से कहा, "मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी |"[8] ये शब्द पूरे वातावरण में गुंजायमान हो उठे और भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे गए, जो आज भी भारतीयों में राष्ट्र-गौरव की भावना को जाग्रत करते हैं |

वृंदावनलाल वर्मा ने इस उपन्यास में तत्कालीन राजनीति के माध्यम से अंग्रेजों की अन्यायपूर्ण नीति को दिखाया है तथा भारतियों में स्वाधीनता के प्रति जो ललक थी उसका सजीव चित्रण किया है |1856 में अंग्रेज पूरे भारतवर्ष में इसाई धर्म का प्रचार कर रहे थे | उसी समय भारतियों में स्वाधीनता के दो चिन्ह प्रकर हुए जो उनके राष्ट्र-गौरव को दर्शाती हैं- वै थे "एक कमल, दूसरा रोटी | कमल के असंख्य फूल भारतवर्ष की छावनियों में फैल गए|"[9] कमल के फूल को 1857 की क्रांति का प्रतिबिंब चुना गया क्योंकि यह क्रांति कमल के फूल की तरह हिंदुस्तान के गौरव का प्रतीक थी|इस क्रांति में हिंदुस्तान के हर छोटी-बड़ी जाति के लोगों ने भाग लिया| यहाँ तक कि रानी के प्रभाव में आकर डाकू सागर संहि ने भी डाके डालने का कार्य छोड़कर झाँसी की सेना में भर्ती हो गया |

उपन्यास के बहुत सारे स्थलों पर हम झाँसी की जनता से रूबरू होते हैं जिसमें जनता का राष्ट्र-गौरव स्पष्ट झलकता है | कर्नल रोज ने झाँसी पर चढाई करने से पहले रानी के पास संदेश भेजा और कहा कि रानी झाँसी के प्रमुख लोगों के साथ निशस्त्र हमारे सामने पेश हो | उस समय झाँसी के लोगों में राष्ट्र-गौरव का जो भाव था वह देखने योग्य था |

उनका संकल्प था-"लड़ेंगे अपनी झाँसी के लिए, अपनी रानी के लिए,मरेंगे | हमारे पास जितना रुपया और आभूष्ण हैं, सब स्वराज्य की लड़ाई के लिए रानी के हाथ संकल्प है |"[10] इसी प्रकार ऐसे बहुत से पात्र उपन्यास में आते हैं | जैसे- तात्या टोपे, कुँवर खुदाबख्श,लाला भाऊ बख्शी, नाना भोपटकर, दीवान जवाहर सिंह, रघुनाथ सिंह, सुंदर, मुंदर, काशी, झलकारी, जूही, मोतीबाई तथा झाँसी की स्त्री-सेना सभी पात्र

अपने राष्ट्र अर्थात झाँसी के गौरव के लिए तन-मन-धन से कृत संकल्प हैं | झाँसी की स्त्रियों के बारे में 'माझा-प्रवास' का लेखक विष्णुराव गोडसे लिखता है कि- "जब वह झाँसी आया तब झाँसी की स्त्रियों की स्वाधीनता को देखकर विस्मित हो गया |"[11]

रानी की सेना में स्त्रियाँ इस तरह काम कर रही थी जैसे देवी दुर्गा ने अनेक शरीर और रूप धारण कर लिए हों | अंत में जब रानी व् सुंदर लड़ते हुए मारी जाती हैं तो बाबा गंगादास कहते हैं –"झाँसी की रानी के सिधार जाने को अस्त होना कहते हो! यह तुम्हारा मोह है | वह अस्त नहीं हुई | वह अमर हो गई |"[12] अंग्रेज रानी को किसी भी हालत में पकड़ना चाहते थे और ढूंढते-ढूंढते रानी की मजार के पास आकर पूछते हैं तो गुलमुहम्मद ने उत्तर दिया– "अमारे पीर का, बो बौत बड़ा बली था |"[13] झाँसी की रानी भारतीय जनता के हृदय पर हमेशा वीरता व् शौर्य के रूप में बसी रहेगी | जब रानी को याद करेंगे | हमारा हृदय गर्व-गौरव से बर जाएगा | रानी ने हमेशा स्वराज्य के लिए लड़ाई लड़ी और जीते-जी कभी भी अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार नहीं की | राष्ट्र-गौरव की जो भावना रानी ने भारतियों के हृदयों में जगाई उसी के फल स्वरूप हमने आजादी प्राप्त की |

संदर्भ सूची :-

1. संपादक आचार्य रामचंद्र वर्मा, बृहत प्रमाणिक हिंदी कोश, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग-इलहाबाद-। पृ॰ सं.-807
2. यथावत, पृ॰ सं.-268
3. डॉ.अमरनाथ,हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन,।-बी, नेताजी, सुभाष मार्ग, दरियांगज, नई दिल्ली-110002, पृ॰ सं.-301
4. यथावत, पृ॰ सं.-302
5. वृंदावनलाल वर्मा, गुगल पुस्तक अमर बेल, प्रभात प्रकाशन, प्रकाशन तिथि जनवरी 1,2009

6. वृंदावनलाल वर्मा, झाँसी की रानी, प्रभात प्रकाशन, 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002, पृ॰ सं.-339

7. यथावत, पृ॰ सं.-89

8. यथावत, पृ॰ सं.-114

9. यथावत, पृ॰ सं.-174

10. यथावत, पृ॰ सं.-234

11. यथावत, पृ॰ सं.-345

12. यथावत, पृ॰ सं.-335

13. यथावत, पृ॰ सं.-338

फोन न:
9467405913
email- Kumarideepak1982@gmail.com